आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 03 | उदयपुर गुरूवार 15 फरवरी 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

भूत-प्रेतों का गांव कुलधरा

-डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी

जैसलमेर से अठारह किलोमीटर की दूरी पर कुलधरा नामक गांव सदियों तक पालीवाल ब्राह्मणों की कर्मभूमि रहा किन्तु दीवान सालमसिंह के आतंकी रवैये से सभी चौरासी गांवों के पालीवालों ने वहां से पलायन कर दिया। उनके श्राप से पिछले दो सौ वर्ष से कुलधरा वीरान होकर भूत-प्रेतों का वास बना हुआ है।

राजस्थान का एक प्राचीनतम ऐतिहासिक नगर है जैसलमेर। धार्मिक एवं सांस्कृतिक अनमोल धरोहरों की खुली प्रदर्शनी है जैसलमेर। थार रेगिस्तान की बालू-रेत के विशाल समुन्द्र में पत्थरों का एक भव्य नखलिस्तान है जैसलमेर। स्वर्ण के समान चमकीले पीले संगमरमर से रची-बनी स्वर्ण नगरी है जैसलमेर। पत्थर से निर्मित कप-प्लेटों को पानी पर तैराता है जैसलमेर। पर्यटन की दुनिया में एक अद्‌भुत अजूबा है जैसलमेर।

ऐसे अजब-गजब जैसलमेर का एक अजग-गजब प्राचीन गांव है कुलधरा जिसे पर्यटक देखना कभी नहीं भूलते। एक खुशहाल गांव की विनाशलीला के साक्षी हैं इसके खंडहर। कुलधरा कभी था हरा-भरा व आबाद पर आज है वीरान-उजाड़। कुलधरा कभी था भोलेभालों का वास पर अब है भयानक भूत-प्रेतों का डरावना डेरा। इसलिए कुलधरा को एक 'हॉन्टेड विलेज' के नाम से संबोधित किया जाता है और इसकी गणना एशिया के प्रसिद्ध 'हॉन्टेड' स्थानों में की जाती है।

जैसलमेर नगर से लगभग 18 किलोमीटर दूर पश्चिम में स्थित है वीरान कुलधरा जो कई सदियों तक पालीवाल ब्राह्मणों की कर्मभूमि रहा। इतिहास के अनुसार ये पालीवाल सन् 1291 में राजस्थान के पाली से पलायन कर जैसलमेर जनपद में आये और कुलधरा सहित चौरासी गांवों में बस गये। कुलधरा पालीवाल जाति-पंचायत का प्रधान केन्द्र था। पालीवाल लोग बड़े परिश्रमी एवं बुद्धिमान थे। उन्होंने उस युग में कोई तकनीक इजाद कर धरती को हरा-भरा बना दिया था। इससे उनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत सुदृढ़ हो गई। वे राजा और प्रजा दोनों की मदद करने में सक्षम थे। कुलधरा गांव की स्थापत्य कला अति बेजोड़ थी। खंडहरों से ज्ञात होता है कि अनूठी डिजाइनों में निर्मित मकान भीषण गर्मी में भी भारी शीतलता का एहसास कराते थे। लोग बड़े सुखी और खुशहाल थे।

आज से लगभग दो सौ वर्ष पहले कुलधरा के सुख चैन को ग्रहण लग गया था। उस समय जैसलमेर रियासत का दीवान था सालमसिंह। वह एक दुष्ट प्रकृति का अहंकारी व्यक्ति था। उसे कुलधरा के पालीवाल समाज के मुखिया की बेटी बहुत पसंद आ गई थी। उसने विवाह का प्रस्ताव भेजा परन्तु वे लोग गैर ब्राह्मण को अपनी बेटी कैसे सौंप देते! इस पर दीवान आगबबूला हो गया और उसने कुलधरा पर कहर ढाना प्रारंभ कर दिया। ब्राह्मणों पर भारी कर लगा दिया, जबकि रियासत में ब्राह्मणों को कर से मुक्त रखा गया था। वह पालीवालों के गांवों में लूटपाट करवाने लगा।

दीवान के भारी दबाव पर भी पालीवाल नहीं झुके और आखिरकार कुलधरा में समाज की बैठक की गई। इसमें निर्णय लिया गया कि इस जनपद को हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ देंगे। इस पर जैसलमेर के चौरासी गांव के पालीवाल एक साथ वहां से पलायन कर गये। पलायन करते समय वे श्राप दे गये कि कुलधरा कभी आबाद नहीं होगा और वहां भूत-प्रेतों का चिर डेरा रहेगा। पालीवालों के इस श्राप का दंड कुलधरा आज भी भुगत रहा है।

कुलधरा गांव के बारे में कई जानकार लोग कहते हैं कि वह रूहानी शक्तियों के अधीन है, इसलिए रात्रि में उसके अन्दर जाने वाला व्यक्ति कभी लौट कर नहीं आता। उसके खंडहरों से रात्रि में कभी-कभी रोने, चीखने, ढोल बजने आदि की आवाजें ठेठ बाहर भी सुनाई पड़ती हैं। पर्यटकों का प्रत्यक्ष अनुभव रहा कि दिन में भी भूत-प्रेतों की आहट व अन्य हरकतें सुनने को मिलती हैं।

लोगों के इन डरावने अनुभवों की वैज्ञानिक जांच-पड़ताल करने हेतु दिल्ली की पेरानार्मल सोसायटी की टीम मई 2013 में कुलधरा आई थी।

-शेष पृष्ठ पांच पर

इतिहास में अजाना रामा भील

- डॉ. पूरन सहगल -

रामा भील रामपुरा का राजा था। उसके अधीन शंखोद्धार, केदारेश्वर, आंतरी, आमद, सुखानंद, साकर्‌या, भुज (बुज), रामपुरा, भानपुरा और सालरमाला के ठिकाने थे। उस समय के ठिकानेदार अपने अपने अंचल के राजा कहलाते थे। कहा भी है-

आड़ा अवला ठेठ तलक भीलाईं को राज।
कीर, भील, मीना, मुरा, सबै निसानाबाज।।
संकादारो, केदारो, अंतारी, आमद, सुखधाम।
साकर्‌यो, बुज, रांपरो, भानपर, सालरमालो धाम।।
जो जठे ठिकानादार, वठे वण को ई चाले राज।
सबै लड़ाका एक सा, सबै निसाना बाज।।

दशपुर अंचल मूल रूप से जनजातीय समाज का सत्ता क्षेत्र रहा है। जितनी भी अन्य जातियाँ आईं सबने भील सत्ता पर अपना वर्चस्व स्थापित किया और धीरे धीरे भीलों की सत्ता समाप्त होती गई। रामा भील बहुत बलशाली योद्धा था। उसके बारे में जनश्रुति है-

रामो भील भई रामो भील।
जब्बर जंगी जण को डील।।
रामपुरा को राजो वाजे ।
भानपुरा तईं रण में गाजे।।

चित्तौड़गढ़ से निष्कासित चन्द्रावत राजपूतों ने सर्वप्रथम आंतरी में अपनी सत्ता स्थापित की। फिर संयोगवश उन्हें मांडव सुलतान का सैन्य सहयोग मिल गया। उस सैन्य सहयोग से उन्होंने सर्वप्रथम आमद फतह किया। फिर रामपुरा पर आक्रमण किया। रामा भील ने अपनी सेना सहित डटकर मुकाबला किया। अन्ततः रामा वीरगति को प्राप्त हुआ। उसकी वीरांगना पुत्री जालकी ने भीलनियों की सेना तैयार कर चन्द्रावत सेना का मुकाबला किया और सुलतानी सेना में भारी मारकाट मचा वीर गति पाई। जहां उसका शीश गिरा वहाँ पर नान्ही चोटी उसकी मंदरी बनी हुई है।

सन् 1409 ईस्वी में सेवाजी रामपुरा की गद्दी पर बैठे। भीलों को शांत रखने के लिए यह घोषणा की कि जब कोई रामपुरा की गद्दी पर बैठेगा। तब रामा भील के वंशज के अंगूठे के रक्त से उसका राजतिलक होगा। वस्तुतः यह एक ऐसा आश्वासन था उसके कारण भील समुदाय का विद्रोह दबा रहा। कहा भी है-

कट गया भील, तुरकड़ा कट गया।
बच्या भील मगरा पे हट गया।।
वेतां - वेतां राज बदल गयो।
भीलां को सब काज बदल गयो।।
रह्यो ठिकानादार न कोई।
बण्या बापड़ा धणी न कोई।।

समाप्त होने पर रामा भील का रामपुरा राजवंशियों की सत्ता में चला गया। आज भी रामपुरा में 'रामा भील को बंगलो' खड़ा है जो उसके गौरवशाली सत्ताधीश होने का प्रमाण दे रहा है।

इतिहासकारों ने रामा भील को सदैव ओझल ही रखा। उसका साम्राज्य मेवाड़ की सीमा से लगाकर गागरोन की हाड़ौती सीमा तक विस्तार लिये था। उसकी यश गाथा में उसका व्यक्तित्व इस प्रकार निखरा मिलता है-

रणजोधो, रणबांकुरो, चार हाथ को डील।
न्हार हरीखी चालणी, उद्‌भट रामो भील।।
खांदे राखे कामठो, खड़गो राखे हाथ।
वंटदार मूछां फबे, धजवट साफो माथ।।

ऐसे रणबांकुरे योद्धा के साथ-साथ वीरांगना जालकी, ताखली, बुधली, वीर रगत्या, कटार्‌या भील के अवदान पर भी पर्याप्त खोज की आवश्यकता है।

स्मृतियों के शिखर (46) : डॉ. महेन्द्र भानावत

जाति बंधन के रहते बड़े पापड़ बेले रूकमा ने

किसी भी समाज में जाति का बन्धन उत्कर्ष के साथ अपकर्ष भी अधिक देता है। ऐसे कई उदाहरण मिलेंगे जब जाति के सख्त बन्धन के कारण मुख्यत: महिला शक्ति को विकास के पायदान से नीचे लुढ़कना पड़ा और योग्यता के रहते भी उन्हें जैसा विकास वे करना चाहती थीं, नहीं कर सकीं। इनमें जोधपुर की ख्यात मांड गायिका गवरीदेवी का नाम लिया जा सकता है जिन्होंने रूंधे गले से मुझे बताया था कि अपनी जाति के कठोर बन्धन के कारण वे फिल्मों में जाकर अपना कमाल दिखाने से वंचित रहीं।

ऐसी ही एक रूकमा देवी गायिका का नाम लिया जा सकता है। इनके जीवनानुभव तो ऐसे सुनने को मिले जो सबसे ही विलग और विचित्र लगे। यह विधि की भी विडम्बना रही कि रूकमा जनमजात पोलियो से ग्रस्त रहने के कारण कभी पांवों से नहीं चल सकी। मैंने जब भी उन्हें देखा, सुना, घुटनों के बल ही उनकी आवा-जाही रही। उदयपुर के शिल्पग्राम के एक समारोह में 15 मई 1998 को मेरी उनसे भेंट हुई तब खुलकर बातचीत करने का प्रसंग भी बना।

रूकमा बाड़मेर से कोई 50 किलोमीटर दूर जानकी नाम के गांव की रहने वाली मांगणियार जाति की अकेली गायिका है जिसे संगीत विरासत में अपनी नानी, मां और बहिन से मिला। जो कुछ बचपन से उसने सुना, उसे अवचेतन में ढालती चेतन बनाने में मगन रही तभी तो आठ वर्ष की गुड़िया उम्र में उसने लाखा लखपत राणा गीत सीख लिया- 'लाखो लखपत राणो जग रो दातार / लाखे ने वदावो साथे मोती।' चार -पांच वर्ष में ही लय-तालबद्ध होता रूकमा का कंठ अपनी ऊंची स्वर लहरी में सबको विमोहित करने लगा।

उसके स्वरों के उत्कर्ष में उसके दिव्यांग की कसैली पीड़ा एक नये अन्दाज में उभरी तो ऐसी कि श्रोता के कान खुले के खुले रह गये। कोई नहीं जान पाया कि रूकमा का शरीर का अधोभाग उसके दुर्भाग्य की भेंट चढ़ चुका है। वह गाने बैठती तो ज्यों-ज्यों उसका स्वर बुलन्दी की टेर खींचता, श्रोता समुदाय ही नहीं, रूकमा का हाथ और चेहरे की रौनक भी उसी ऊंचाई तक सबको पहुंचा देती।

उसके गाने के अन्दाज में छोटी उम्र में भी उसका संगीत टप्पा देकर पकाई लिये धनधनी होता लगता। आवाज के इसी कमाल से उसे जसोल के राणी मटियाणी के थान पर नौकरी मिल गई जहां अपनी बुलन्द गायकी से वह देवी-देवताओं को रिझाने के साथ-साथ भक्तों को भी भावमय बनाकर वाहवाही पाती।

नौसर गांव में रूकमा को कमायचा वादक पति मिला जिसने उसको दूर-दूर तक सम्बल दिया किन्तु विधि की विडम्बना ही रही कि मात्र 28 वर्ष की उम्र में ही कैंसर की जकड़न ने उसे लील लिया। कहते हैं, मुसीबतें अकेली नहीं आतीं। आती हैं तो

वे अपने साथ बहुत कुछ दुख दर्द और विसंगतियों के टीले लेकर आती हैं।

रूकमा के पास दिव्यांगता का असह्य बोझ और ऊपर से वैधव्य के पहाड़ ने उसके हाड़ को ही नहीं दबोचा, हिये को भी बेहिसाब कर दिया। ऊपर से तीन सन्तानों के पालन-पोषण का जिम्मा आ पड़ने से रूकमा की जमीनी हकीकत हारे को हरिनाम भी नहीं रह पाई। अनवरत आंसू, चारों ओर घना अंधेरा और समाज के सर्वथा असहयोग के तानोंबानों ने उसे जड़ तक झकझोर दिया। रूकमा की जाति में उघाड़े मुंह गाने की, मंच पर आने की कोई कल्पना तक नहीं कर सकता था।

अंधेरा चाहे कितना ही घना हो, एक न एक दिन उसे भी प्रकाश की किरणों से जूझना पड़ता है सो उसके पैतृक गांव का खड़ताल वादक सिद्दीक एक दिन रूकमा को लोककला मर्मज्ञ कोमल कोठारी के पास ले गया जो उसके लिये तिनके की नाव सिद्ध हुए। उन्होंने रूकमा को न केवल परखा अपितु जयपुर में एक कार्यक्रम आयोजित कर उसका भावभीना सम्मान किया तथा शॉल, श्रीफल के साथ सात सौ रुपया नकद और एक व्हील चेयर भेंट की।

रूकमा के जीवन को एक साथ कई किरणों का प्रकाश देता यह पहला कार्यक्रम था जिसमें श्रोता पहलीबार एक श्रेष्ठतर गीत की श्रेष्ठतम ऊंची और लम्बी तान सुनकर खो गये। रूकमा के गाये लाखो व पालखड़ी गीत के बाद वन्समोर की झड़ी लग गई फलस्वरूप उसने दामाद के ससुराल जाने पर गाया जाने वाला घुड़लियो, वर्षा ऋतु में लूनी नदी के पूर बहाव से सम्बन्धित लुणधर, बधावा तथा बेटी की विदाई पर गाया जाने वाला अरणी गीत सुनाया तो रूकमा की कीर्ति बिना रूके बांसों चढ़ गई।

कहते हैं, अच्छाई न किसी से कैद होती है और न कोई उसे बांध ही पाता है सो रूकमा के स्वर सात समंदर पार तक अपनी ठठक देने लगे। उसे बीबीसी लन्दन का बुलावा मिला। कोमलजी के साथ रूकमा ने पहली बार हवा गाड़ी की सफर की तो अपने बचपन की, नानीमां की, दिव्यांगता की यादों में आंसू लिये धारासण हो गई।

वहां रूकमा ने गाजीखां के साथ लाखो तथा पालखड़ी गीतों की बुलन्दी दी। गाजीखां तब एक ख्यात गायक के रूप में नामवरी लिये हुए थे जिनकी प्रसिद्धि औरत की आवाज में भी स्वर वर करने में कमाल लिये थी। मैंने गाजीखां को भी बड़े भाव-विनोद में खूब सुना।

यात्रा जब चल पड़ती है तो अविराम हुई मिलती है। रूकमा बताती है कि उन्हीं दिनों एक कार्यक्रम अलवर में रखा गया जहां राजस्थान पत्रिका के संस्थापक कर्पूरचन्द कुलिशजी ने उन्हें पांच तोला चांदी पर स्वर्ण मंडित पदक प्रदान किया। बीच-बीच में रूकमा अप्रासंगिक होती अपने संघर्षों और सामाजिक दुष्टाचार को भी व्यक्त करती कहती है, समाज ने तो मेरे हर रास्ते पर कांटे ही बोये, बिछाये। विदेश यात्रा पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

घूंघट खोला तो कई तरह की अंगुलियां उठने लगीं। चेतावनी दी गई कि गाना नहीं छोड़ा तो बालबच्चों को समाज से वंचित कर दिया जायेगा। यह हुआ भी। बाद में पुलिस ने बीचबचाव कर समाज से समझौता कराया और हालात ठीक हुए।

शिल्पग्राम में रूकमा ने मुझे अपने बेटे गफ्फूरखां से, बड़ी बहिन अकला से मिलाया। अकला ढोलक तथा बड़ा बेटा गफ्फूरखां खड़ताल बजाता है और वह स्वयं ढोल पर अंगुलियों का उभार देती है।

अपने स्वरों में लाली और कांति लाते वह बोली कि मेरा वजन 106 किलो होने के बावजूद बेटा मुझे अपनी पीठ पर ऊंचाये रहता है। जब तक वह मेरे साथ है और गीतों में सुरीलापन है तब तक मैं गाती रहूंगी।

दुखद निधन

कानोड़ के हिन्दी-राजस्थानी के सुख्यात रचानाकार श्री भेरूसिंह राव 'क्रांति' का जनवरी के आखिरी दिन निधन हो गया। पिछले चार-पांच वर्ष से वे कैंसर से ग्रस्त थे। उनके सुयोग्य परिजनों ने अच्छा से अच्छा इलाज करवाया किन्तु विधि की विडम्बना और नियति की छलना के आगे किसी का वश नहीं चलता।

उनसे मेरी नियमित बात होती रहती और हम साहित्येतर भी कई तरह की हलचल भरी बातों की खबर देते-लेते रहते। निधन के पांच दिन पूर्व उनने मुझे सूचित किया कि वे इलाज के लिए उदयपुर आये हुए हैं और अपने पुत्र के वहां स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। आवाज थोड़ी टूटन देती भर्राई हुई थी सो मैंने अधिक बात करना उचित नहीं समझ यही कहा कि दवाई बराबर लेते रहें।

जवाहर विद्यापीठ के संचालक मेरे साथी सोहन धींग ने बताया कि श्री राव एक सामान्य शिक्षक के रूप में विद्यापीठ में नौकरी करते हुए हायर सैकण्डरी स्कूल के प्रिंसिपल बने। श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में छात्रों में लोकप्रियता प्राप्त करते राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित हुए। उनका कविता, कहानी, संस्मरण तथा जीवनी लेखन का प्रभाव सब ओर प्रेरक बना। स्काउट आन्दोलन से उनके जुड़ाव ने कई छात्रों को राष्ट्रपति सम्मान योग्य बनाया और स्वयं बेडन पॉवेल नाम से अभिहित हुए। कई शिविर भी उन्होंने लगाये। सेवानिवृत्ति के बाद भी वे उतने ही सक्रिय तथा रचनाधर्मी बने रहे।

श्री राव के विद्यापीठ में रहते मैंने कभी राजस्थान साहित्य अकादमी तथा कभी राजस्थानी भाषा-साहित्य-संस्कृति अकादमी के सहयोग से साहित्यिक समारोह एवं कवि सम्मेलन आयोजित किये। इनमें राजस्थान तथा बाहर के ख्यात-प्रख्यात लेखकों एवं कवियों की भागीदारी से पूरे गांववासी लाभान्वित हुए। भेरूसिंहजी ने 'रगत री लाज' नामक अपनी कृति के लोकार्पण समारोह पर मुझे तथा नंदबाबू को आमंत्रित किया। वह समारोह बड़ा स्मरणीय तथा विशेष प्रभावी रहा। इस अवसर पर उनके श्वसुरगृह के परिजनों ने बड़े लाड़, उत्साह तथा उल्लास के साथ जामाता के रूप में जो चावा-ठावा सम्मान किया वह सबके लिए सम्मोहक बना।

सामन्तकाल में कानोड़ मेवाड़ का प्रथम श्रेणी का प्रमुख ठिकाना रहा। महाराणा संग्रामसिंह ने वि.सं. 1768 में सारंगदेव को जागीर प्रदान कर सामंत नियुक्त किया। यहीं वीर दुर्गादास राठौड़ ने अपनी पुत्री अजबकुंवरबाई का विवाह सारंगदेवोत के साथ किया। यहां के राव परिवार के सदस्यों ने ठिकाने द्वारा संचालित कोतवाली, असन, वास्तु आदि प्रमुख विभागों में प्रमुख भूमिका निभाई। भेरूसिंहजी के दादाश्री नवलसिंहजी की कवित्व शक्ति से प्रभावित हो दरभंगा नरेश ने कविभूषण की उपाधि से विभूषित किया। भेरूसिंहजी अपने पूर्वजों की परम्पराओं का बड़े श्रेष्ठत्व के साथ निर्वाह करते हुए ओजस्वी तथा ऊर्जावान बने रहे। उनकी लिखी 'विख्यात वीरांगनाएं' पुस्तक की मैंने भूमिका भी लिखी। आशा है, उनके सुयोग्य पुत्र उनके अप्रकाशित साहित्य का प्रकाशन कर उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखेंगे।

पिछले माह जानेमाने ख्यातलब्ध लेखक मनासा के आदरमना साथी डॉ. पूरन सहगल की जीवनसंगिनी का बिछोह हो गया। वे पिछले लम्बे समय से ठंडीमंडी चल रही थीं। पूरनजी ने निरन्तर उनके स्वास्थ्य का बड़ा ध्यान रखा और रोगोपचार के प्रति सजगता रखी जिससे भाभीश्री स्वास्थ्य लाभ की रफ्तार लिये थीं किन्तु बिना कोई दुर्बल संकेत दिये वे सदा के लिए स्मृति शेष हो गईं।

ऐसी ही घटना कुंभलगढ़ निवासी सुकवि माधव दरक के साथ घटी। विगत छह-सात दशक से राजस्थानी कवि के रूप में माधवजी पूरे देश में अपनी कविताओं की धूम मचाये हुए हैं। 'एड़ो म्हारो राजस्थान' कविता के कवि के रूप में वे हर जगह अपनी फरमाइशी-पहचान दिये समाद्रत हैं। माधवजी से मेरा जुड़ाव भी उनकी कविताई जितना ही पुराना है। उनकी पत्नी का निधन भी हम सबके लिए अपूरणीय क्षति है। शब्द रंजन परिवार सभी हुतात्माओं के प्रति नमित श्रद्धाभाव लिये है।

- म.भा.

डॉ. कोठारी एवं डॉ. जैन को आचार्य भिक्षु प्रज्ञा सम्मान

उदयपुर। आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान केलवा द्वारा विज्ञान समिति में आचार्य भिक्षु प्रज्ञा सम्मान एवं आचार्य भिक्षु व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। व्याख्यानमाला में डॉ. जगमोहन हूमर ने कहा कि अमेरिका में जैनिज्म पंथों में बंटा हुआ नहीं होकर एक सूत्र में पिरोया हुआ है। वहां दिगम्बर एवं श्वेताम्बर भगवान की मूर्तियों के दर्शन एक ही मन्दिर में होते हैं जो जैन सम्प्रदाय की एकता को दर्शाते हैं।

समारोह में आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान केलवा द्वारा जैन विद्वान डॉ. देव कोठारी एवं डॉ. प्रेम सुमन जैन को आचार्य भिक्षु प्रज्ञा सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. प्रेम सुमन जैन ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने भारतीय मूल्यों को आगे बढ़ाने का कार्य किया, जो भारतीय साहित्य में देखने को मिलते हैं। डॉ. देव कोठारी ने कहा कि जैनधर्म की प्राचीनता को हम भूलते जा रहे हैं। कुरान में भी जैनधर्म का उल्लेख मिलता है। समारोह में विज्ञान समिति के अध्यक्ष डॉ. के. एल. कोठारी द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'चन्दन से वन्दन की ओर' का विमोचन किया गया।

खोज खबर

मेवाड़नाथ एकलिंगजी का राजकाज

उदयपुर से लगभग 20 किलोमीटर दूर एकलिंगनाथ मंदिर के तीन ओर तीन मगरों पर राठासन माता (पूर्व), खेमजमाता (पश्चिम) तथा अड़बदा माता (उत्तर) बिराजमान हैं। आमलियाजी तथा उमरियाजी नामक भैरू छड़ीदार के रूप में एकलिंगनाथ के प्रहरी बने हुए हैं। इन्हीं एकलिंगनाथ के श्रीचरणों में महाराणा ने अपना राजपाठ न्यौछावर कर उनकी दीवानी धारण की।

महाराणा भूपालसिंह के समय एकलिंग मंदिर के प्रबंधक रहे खेमशंकर दशोरा (80) ने बताया कि उनके ताऊ 1008 श्री सवाई कैलाशानंद गोस्वामी इस मंदिर मंडल के 36 वर्ष तक सर्वाधिकारी रहे। महाराणा फतहसिंह सजोड़े लवाजमे के साथ गुरू चरण प्रक्षालन हेतु इन्हें हरिद्वार लेगये। वहां से लौटकर विशेष उत्सव के साथ गोस्वामीजी के पांव में लंगर एवं तोड़े पहनाये।

एकलिंगनाथ के प्रतिनिधि के रूप में गोस्वामीजी की हर आज्ञा को महाराणा शिरोधार्य करते। इनकी लिखी चिट्ठी को भगवान एकलिंगनाथ की चिट्ठी मानते। यहां तक कि उदयपुर की जेल में सजा काट रहा कोई कैदी भागकर यदि एकलिगनाथ के द्वार आजाता तो उसकी सजा तक माफ हो जाती। गोस्वामीजी की दिनचर्या, रहन सहन, खान-पान सब जुदा होता। गोस्वामीजी का रसोड़ा, एकलिंगनाथ का रसोड़ा एवं नौकर-चाकरों के लिए रसोड़ा जुदा-जुदा होता।

खेमशंकरजी ने बताया कि यहां हर समय 100 घोड़े, 2 हाथी और 2 मींडे रहते। मींडे इतने बलशाली और हष्ट-पुष्ट होते कि एक भेटी में ही अच्छों-अच्छों का काम तमाम कर देते। यहीं अलग से बड़ा समृद्ध शस्त्रागार था जिसमें सब तरह के हथियार जमा रहते।

हर समय फौज और लबाजमा चौकन्ना रहता। पचासों तरह की बंदूकें और तेजी से वार करने वाली चमकदार तलवारें रहती। घोड़ों की देखभाल करने वाले, पानी पिलाने वाले भिश्ती, चाबुक सवार और पांडू नियमित बने रहते। बाहर जाने पर पांडू या तो घोड़े के आगे चलते या फिर पीछे रहते। रतनपुरी गुसाई इंचार्ज थे जो पायगा दरोगा कहलाते थे।

महाराणा अथवा जागीरदार के देवलोक गमन पर उनका मुख्य घोड़ा एकलिंगनाथ को भेंट होता। ऐसे ही आयुघ भेंट होते। चोरी डकैती और अन्याय करने वालों को सजा दी जाती। कठिन सजावाले के दोनों पांवों में लकड़े का गट्ठा फंसा दिया जाता जिससे उसका चलना-फिरना बंद हो जाता। यह खोड़ा कहलाता। बेड़ी डालने की सजा में दोनों पांवों के बीच लोहे की सांकलनुमा बेड़ी होती जिससे मुश्किल से चलना-फिरना होता। ऐसे भी कैदी होते जिनके खोड़ा-बेड़ी दोनों होती। इन कैदियों से भारी मेहनत का काम कराया जाता।

खेमशंकरजी ने बताया कि उनके बड़ेरे डूंगरेश्वरजी को महाराणा ने राजसमंद का रतनखेड़ा गांव दिया। डूंगरेश्वरजी की लोकप्रियता के कारण आगे जाकर यह गांव डूंगरखेड़ा नाम से जाना गया। मेवाड़ में दंगा होने के कारण डूंगरेश्वरजी के वंशज रत्नेश्वरजी (रामेश्वरजी) उज्जैन चले गये। इनके पुत्र मुकन्ददत्त हुए जिन्हें महाराणा सज्जनसिंह ने सांडीवाल (ऊंट सवार) भेजकर उदयपुर बुलवाया। सम्मान सूचक हाथी की सवारी दी। भागवत कथा सुनी और कथाभट्ट नियुक्त किया। ये मुकुन्ददत्त खेमशंकरजी के दादा थे।

डूंगरेश्वरजी के महादेव नामक पुत्र हुआ जिसने डूंगरखेड़ा (डूमरखेड़ा) में संगमरमर की बावड़ी बनवाई जो महादेवजी की बावड़ी नाम से जानी गई।

एकलिंगनाथ की पहाड़ी कई रहस्यों का पिटारा लिये है। यहीं भरथरी की गुफा है जहां भरथरी ने तपस्या की। शीतऋतु में यहीं गोस्वामीजी का बिराजना होता तब यहीं उनका रसोड़ा, हाथी, घोड़े, लाव-लस्कर होते।

प्रो. भारद्वाज और भूदर्शन

प्रो. दिनेशचन्द्र भारद्वाज से मेरा मिलना होता रहता जब वे सुखाड़िया विश्वविद्यालय में भूगोल के प्राध्यापक थे। एक सामान्य हैसियत से उन्होंने अपने अध्ययन, मनन के बल पर न केवल उच्च पद आसीन किया बल्कि भूगोल के क्षेत्र में अपनी निराली और अनूठी कह सकते हैं, अकल्पनीय पहुंच दी।

15 मार्च 1926 को एक सामान्य सूत्रधार परिवार में उदयपुर के भटियाणी चौहट्टा मोहल्ले में जन्म लेकर कंवरपदा फिर फतह हाई स्कूल, फिर महाराणा भूपाल कॉलेज और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ाई करते शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र को प्रभावित किया। उदयपुर नगर परिषद में सदस्य निर्वाचित हुए। प्रारंभ में विद्या भवन, शाहपुरा में भूगोल शिक्षक रहे फिर जोधपुर, गंगानगर, भीलवाड़ा में भूगोल व्याख्याता और तदनन्तर जयपुर, उदयपुर में विवि प्राध्यापक बने।

16 नवम्बर 1978 को उन्होंने अपने निवास पर मुझसे खुलकर बीतचीत की और बोले - जीवन को निचोड़े बिना कुछ प्राप्ति नहीं हो सकती। कितनी जगह पापड़ बेलने पर कुछ प्राप्त होता है लेकिन संतोष तब भी नहीं होता। फिर सब कुछ कर लेने पर भी भाग्य प्रबल न हो तो कोई क्या करे। मैंने कहा, आपके कार्यों की मीमांसा तो आपका भाग्य स्वयं करता आगे से आगे पथ प्रशस्त कर रहा है। जिसे अपनी जमीन दिखती रहती है वह कम निराश होता है। अपनी जमीन का ताप व्यक्ति को ठेठ तक उज्वला आग दिये रहता है। वह आग व्यक्ति को न जलाती है, न झुलसाती है बल्कि मीठी मार देकर पीठ भी थपथपाये रखती है। मेरी यह बात सुन भारद्वाजजी गंभीर मौन हो गये। लगा, कहीं खो गये।

मेरी दृष्टि में ही नहीं, कइयों की दृष्टि में भी उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान 'भूदर्शन' नामक त्रैमासिक पत्र का प्रकाशन ही कहा जाएगा। भूगोल विद्या के क्षेत्र में उनका देश में यह पहला चर्चित पत्र था बल्कि हिन्दी का तो प्रथम प्रकाशन था। इसके माध्यम से उन्होंने पूरे देश में भौगोलिक पहचान दी और भूगोलवेत्ताओं को लिखने के लिए प्रेरित किया।

प्रख्यात भूगोलवेत्ताओं को लोकप्रिय बनाने की दृष्टि से प्रो. भारद्वाज 50 के करीब विशिष्टजनों के रेखाचित्र और जीवनचरित तैयार किये। इससे न केवल शिक्षक ही सक्रिय हुए अपितु अनेकानेक छात्र समुदाय भी उत्प्रेरित हुए और उन्होंने स्कूल, कॉलेजों में उनके रेखाचित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की।

इसके अलावा प्रो. भारद्वाज ने राजस्थान का चित्रमय मानचित्र तैयार किया। राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ने उनकी स्थूल आलेख पुस्तक प्रकाशित की जो प्रयोगात्मक भूगोल पक्ष पर लिखी पहली पुस्तक है। इसमें 250 के लगभग चित्र, मानचित्र हैं। इसी अकादमी ने उनकी भौगोलिक प्रतिरूप निर्माण पुस्तक का प्रकाशन किया जो इस विषय की पहली मौलिक कृति सिद्ध हुई।

अपने विश्वविद्यालय में प्रो. भारद्वाज ने सबसे पहले तृतीय जगत का भूगोल विषय पढ़ाना शुरू किया। उन्होंने अखिल राजस्थान भूगोल परिषद की स्थापना कर उसके बेनर तले कई सेमीनार, कार्यशालाएं एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया।

कहना न होगा कि भूगोल जैसे विषय की अखिल भारतीय पहचान देने, उस क्षेत्र में विद्वान तैयार करने और नई राहों का अन्वेषण करने वाले वे निराले अद्भुत और हर समय सजगता के साथ नई दृष्टि का सोच देने में सर्वथा आगे रहे। उन्होंने मेरा भी एक रेखाचित्र बनाकर मुझे भेंट किया जो सर्वाधिक सराहा गया और अब जब वे हमारे बीच नहीं हैं, उनकी मेरे लिए यह अमूल्य भेंट उनकी यादगार देती अनेक रूपों में हमारी साहित्यिक स्नेहिलता को रेखांकित करती है।

प्रो. भारद्वाज की धर्मपत्नी भी बड़ी विदुषी तथा आदर्श शिक्षिका रहीं। भूपाल नोबल्स कॉलेज वालों ने जब विवेक विद्या मंदिर की स्थापना की तो मैंने अपने बच्चों को वहां दाखिल कराया। इस कारण भी श्रीमती भारद्वाज से हमारा पारिवारिक रिश्ता और सुदृढ़ हुआ।

कवि सम्मेलन और ज्वार पत्रिका

अपने गांव कानोड़ में तब बाहर जो भी पढ़ते वे दो माह की ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में जरूर आते। तब बीजली पानी जैसी कोई सुविधा नहीं थी और काम भी कुछ नहीं था तो दिनभर ताश खेलना, गिल्ली डंडा खेलना, दड़ा-डोटी खेलना, अंटी तथा चरभर जैसे अनेक खेल होते जो खेलते रहते। इस खेला-खेली में इतने व्यस्त हो जाते कि कभी-कभी खाना खाना ही भूल जाते। सुबह नहाने कमलवाले तालाब पर तो शाम को पीपली वाले कुंड में नहाते लेकिन हम कुछ लोग थे जो साहित्यिक अभिरुचि के थे और कविता, कहानी, लिखते। दिन को डाक के समय पोस्ट ऑफिस चले जाते जहां हेड मास्टर उमादत्तजी डाक संभालते। साप्ताहिक नवजीवन ललकार आते जो पढ़ते। इनमें भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावत सर्वाधिक छपते रहते। कभीकभाक मेरी या फिर विपिनजी जारोली की कविताएं छपतीं।

कुछ मित्रों ने तय किया कि ठाले बैठे कुछ ऐसा काम किया जाय जिसमें सबका मन रमजाये और सबके साथ सम्पर्क बाद में भी बना रहे, जब स्कूल-कॉलेज खुलने के बाद सब अपने-अपने ठिकाने चले जायें। तो हमने एक परिषद खोलने का निर्णय लिया। नाम सुझाये गये-तरूण परिषद, विद्यापीठ परिषद, युवक परिषद। जवाहर विद्यापीठ में पढ़े स्नातकों की तीन घंटे तक चली सभा में तय किया गया कि नई परिषद का निर्माण करने की बजाय कुमार साहित्य परिषद की शाखा ही खोल दी जाये। जोधपुर में नेमिचंद जैन 'भावुक' यह संस्था चलाते थे सो यहां उसकी शाखा खोलदी और उसके उद्घाटन के साथ एक कवि सम्मेलन रखने का निर्णय लिया।

निर्णयानुसार 6 जून 1956 को जवाहर विद्यापीठ के संचालक उदय जैन से परिषद का उद्घाटन हुआ और उसके साथ ही कवि सम्मेलन रखा जिसमें बाहर छोटीसादड़ी गुरुकुल के अध्यापक राधामोहन पुरोहित, जागृत साहित्य परिषद उदयपुर के मंत्री योगेश 'अटल', कांकरोली के समर्थ जैन, राजनगर के द्वारकेश पुरोहित तथा भींडर के जयसिंह जौहरी थे। स्थानियों में राजकीय माध्यमिक शाला के प्रधानाध्यापक नंदलाल दशोरा, विपिन जारोली, डूंगर पोखरना, श्रीचंद 'दिगन्त', सोहन धींग तथा मैंने भाग लिया। यह कार्यक्रम बड़ा उपलब्धिमूलक यादगार बन गया।

उसी सयम परिषद की कार्यकारिणी बनी जिसमें नरेद्र भानावत अध्यक्ष, चतुर्भुज स्वर्णकार उपाध्यक्ष, विपिन जारोली प्रधानमंत्री, सोहन धींग साहित्य मंत्री, चांदमल दक कोषाध्यक्ष तथा मैं विशेष सदस्य बनाया गया। विपिनजी वहीं नौकरी करते थे सो उन्होंने समय-समय पर परिषद की ओर से सूर तुलसी प्रेमचंद जयंती मनाई और यह भी तय किया गया कि एक पुस्तकालय भी हो तब सबसे 500 पुस्तकें एकत्र कर विपिनजी को यह दायित्व दिया।

इसी के साथ ज्वार नाम से हस्तलिखित पत्रिका निकालने का निर्णय लिया और नई कार्यकारिणी बनाई जिसमें नरेन्द्र भानावत अध्यक्ष, सुंदर मुर्डिया उपाध्यक्ष, विपिन जारोली प्रधानमंत्री, पूर्णचंद सहलोत कोषाध्यक्ष तथा महेन्द्र भानावत, श्रीचंद 'दिगन्त' एवं सोहन धींग संपादक बनाये गये।

तदनुसार पहला अंक दीवाली विशेषांक निकाला। विविध 66 पत्रकों पर एकतरफा लेखन दिये यह पूरा अंक मेरी विविध रूपा हस्तलिपि में विविध रंगी सज्जा लिये बड़ा ही कलात्मक बन पड़ा। इसमें नरेन्द्र भानावत का इंसान की पूजा का दिन एकांकी तथा गगनदीप नीचे उतरो शीर्षक गद्यगीत छपा। श्रीचंद, विपिन, चतुर्भुज, सोहनधींग, चांदमल दक की कविताएं तथा मेरी अन्धेरी नगरी लम्बी कविता और एक गीत है। एक लेख प्रकाश स्तम्भ दीवाली नाम से प्रो. माधोदास व्यास का है जो बीकानेर में बी.ए. में हमें हिन्दी पढ़ाते थे।

इसी प्रकार ज्वार का दूसरा अंक फरवरी-अप्रेल 1957 का है जो गणतंत्र दिवस का विशेषांक है और श्रीचंद की हस्तलिपि में संवारा गया है। कुल 48 एकतरफा हस्तलेखन की इस पत्रिका में धनेश भाणावत, श्रीचंद, महेन्द्र, विपिन के साथ ही रवीन्द्र पोखरना, कनक उदावत तथा नवल मोदी की रचनाएं हैं। दोनों जिल्द बंधे अंक मेरे पास बड़े जतन से संवारे हुए हैं।

- म. भा.

जगह-जगह शिक्षा-मंदिर हों

जहां आवश्यक हो, जिस गांव में मंदिर न हों, वहां मंदिर अवश्य बनना चाहिये क्योंकि मंदिर हमारी मूल संस्कृति है लेकिन अनावश्यक मंदिरों के लगातार निर्माण के स्थान पर हमें गली-गली शिक्षा-मंदिरों का निर्माण करना चाहिए। इससे एक संस्कारी मानव का निर्माण होगा, तो धर्म भी सुरक्षित रहेगा, समाज भी।पुराने जीर्णशीर्ण मंदिरों का जीर्णोद्धार अवश्य होना चाहिये। जीर्णोद्धार का अर्थ है- प्राचीनता को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखते हुए उसे स्थायी रूप देना। नवनिर्माण को जीर्णोद्धार नहीं कहा जा सकता। आजकल अपने नाम के लिए पुराने मंदिरों को सर्वथा ध्वस्त कर उनका प्राचीन स्वरूप नष्ट कर उनके पुरातात्विक मूल्यों को सर्वथा नजरअंदाज कर जो नये निर्माण का रूप नजर आता है, निश्चित ही वह इतिहास समाप्त करने का षड़यंत्र है।

-मणिप्रभ सागर

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 15 फरवरी 2018

सम्पादकीय

हिन्दी पाठकों की बढ़त

हिन्दी के प्रति विशेष मोह और आत्मीय रूप से सम्मोहन होते हुए भी हमारे मन में पता नहीं, ऐसा दगदगा क्यों पैठा हुआ है कि हिन्दी की पाठक संख्या दिनोंदिन घटती जा रही है और अंग्रेजी अखबारों की बन आई है। आजादी के पहले के स्वदेशी आंदोलन के प्रभाव में आयो लोगों में अंग्रेजी के प्रति वितृष्णा का भाव होना स्वाभाविक है इसीलिए अध्ययनकाल में भी वे अंग्रेजी में फिसड्डी ही बने रहे। उन्हीं लोगों ने बाद में कई तरह के संघ-संगठनों के माध्यम से अंग्रेजी हटाओ के नारे को अपनाकर हिन्दी को गले लगाने का समर्पण एवं साधनामूलक उपक्रम किया। हिन्दी स्कूल खोले और हिन्दी के प्रसार उत्कर्ष के व्रतार्थी बने। इतना होने पर भी लगता रहा कि हिन्दी पिछड़ रही है।

लेकिन यह जमीनी प्रसन्नता देने वाला समाचार है कि भारतीय पाठक सर्वेक्षण के ताजा आंकड़े बड़े चौंकाने वाले सिद्ध हुए हैं। उसके अनुसार हिन्दी अखबारों की पाठक संख्या में लगातार बढ़त हो रही है। पिछले तीन वर्षों में ग्यारह करोड़ हिन्दी पाठकों की वृद्धि हुई। शुभ तो यह है कि शहरों की तुलना में गांवों के पाठक अधिक बढ़े हैं। यह भी कि अंग्रेजी अखबारों की तुलना में तमिल, मराठी, तेलगु तथा मलयालम के अखबारों की पाठक संख्या में वृद्धि हुई है।

अंग्रेजी का खौफ तो इसलिए छाया हुआ है कि अंग्रेजी अखबारों में काम करने वाले अधिक अप्टूडेट तथा सुविधाभोगी हैं। उनको दिया जाने वाले वेतन भत्ते तथा अन्य सहूलियतें भी कहीं अधिक हैं। पुराने पाठकों में मैंने ऐसे भी देखे हैं जो अंग्रेजी अखबार ही पढ़ते हैं और उसे ही विश्वनीय भी समझते हैं। हमारी मानसिकता ही ऐसी बनी हुई है। यही कारण है कि अंग्रेजी भाषा ही नहीं, हम भूषा में भी अंग्रेजियतके ही कायल बने हुए हैं। हमें इस मानसिकता को छोड़ना होगा।

यह हिन्दी का ही बढ़ता प्रभाव और खौफ है कि अंग्रेजी पत्रों में प्रमुखता से छपने वाले विज्ञापनों में अंग्रेजी का भी हिन्दीकरण होता दिखाई दे रहा है। इससे भी स्पष्ट है कि हमारी अंग्रेजी मानसिकता में भी हिन्दी का दबदबा छा रहा है। इन विज्ञापनों में अंग्रेजी के साथ हिन्दी शब्दों का भेलमेल सभी को सम्मोहित किये रहता है। यह भाषा का बिगड़ाव नहीं, अपितु अंग्रेजी पर हिन्दी का टींचनभरा आसढ़न है।

दादाजी का नाम

एक बार एक अध्यापक कक्षा में हिन्दी पढ़ा रहे थे। पुस्तक में 'मेरे दादाजी' नाम का एक निबन्ध था। अध्यापक ने प्रथम पंक्ति में 'मेरे दादाजी का नाम श्री ..... जी' है लिखवाकर कह दिया कि इसमें आप स्वयं अपने-अपने दादाजी का नाम लिख लेना और आगे की पंक्तियां लिखाकर निबन्ध पूर्ण कर दिया।

पांच बच्चों ने दादाजी का नाम नहीं लिखा। अध्यापक ने एक-एक से पूछा, बच्चों! दादाजी का नाम क्यों नहीं लिखा? बच्चों ने उत्तर दिया, सर! हमें दादाजी का नाम याद नहीं है। अध्यापक मन ही मन सोचने लगा, 'बच्चे देश-दुनिया की बात तो सीख लेते हैं, पर अपने घरजनों के नाम तक नहीं जानते। उनकी सेवा करने का तो फिर सवाल ही पैदा नहीं होता।'

-दयाराम ढिल 'दिलेर'

डॉ. राजमती सुराना सम्मानित

राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित एवं राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य के करीब 40 अवार्ड से सम्मानित भीलवाड़ा निवासी डॉ. राजमती सुराना को जयपुर में शिक्षा और साहित्य व समाज सेवा के लिए 'इंडियन ट्रेब्लेजर वुमन अवार्ड' से सम्मानित किया गया। डॉ राजमती सुराना के अब तक चार किताबें और पांच साझा काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। अभी एशियन लिटरेरी कनाडा द्वारा 'पेटल्स ऑफ लव' किताब में इनकी अंग्रेजी में लिखी दो कविताएं चयनित हुई है।

पत्र-पिटारी

पाण्डुलिपि पर सर्वोच्च पुरस्कार

शब्द रंजन के 15 दिसम्बर 2017 के अंक में डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा लिखित 'पाण्डुलिपि पर सर्वोच्च पुरस्कार' शीर्षक आलेख के लिए कहना चाहूंगा कि उन्होंने साहित्य क्षेत्र में बेबाकी से हो रही विसंगतियों तथा विद्रुपताओं पर न केवल साहित्य समाज का ध्यान आकर्षित किया अपितु बहुत कुछ करने, सोचने, समझने तथा आंखें खोलने का भी सबब दिया।

शास्त्रों में लिखा है -'मौनम धारणम शुभम'। इसलिए मैंने अब तक यही शुभ समझा था कि समय की बलिहारी को देखते हुए नहीं बोलना अच्छा है लेकिन कई बार ना बोलना भी अशुभ हो सकता है, ऐसा भी शास्त्रों में बताया गया है। अब बोलने के लिए मेरी चुप्पी तोड़ी डॉ. महेंद्र भानावतजी ने।

राजस्थान साहित्य अकादमी में अध्यक्ष रहते डॉ. प्रकाश आतुर ने नंद चतुर्वेदी की गद्य पाण्डुलिपि 'शब्द संसार की यायावरी' पर दस हजार रुपए का सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान किया और समय रहते डॉ. भानावतजी ने अकादमी द्वारा दिया जाने वाला पुरस्कार किसी पाण्डुलिपि पर नहीं दिया जाकर प्रकाशित कृति पर दिये जाने का प्रस्ताव पास करा दिया।

लेकिन मेरे साथ कुछ उल्टा ही हुआ। मैंने किसी मित्र का कविता संकलन डॉ. राजेंद्र बारहठ से मांग कर पढ़ी जिस पर राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी ने सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान किया। उस कविता संकलन में हर कविता में विसंगतियां, विकृतियां, भाषा की शब्द त्रुटियां और छंद-अलंकारों को छोड़ भी दें, तब भी कविताएं अनेक प्रकार से काव्य दोषों से भरपूर थी। मैंने वह पुस्तक डॉ. बारहठ को लौटाते हुए निर्णायक मंडल के नाम जानने चाहे तो उन्होंने अपनी अनभिज्ञता प्रकट की। जब उस मित्र को सारी स्थिति का पता चला तो उसने मेरे प्रति घोर नाराजगी प्रकट की।

मैत्री तो डॉ. भानावत और नंदजी की कहिये जो अन्त तक याराना रही ऐसी कि जिस दिन नंदबाबू का निधन हुआ, उसी दिन उन्होंने अपनी ताजा लिखी कविता भानावतजी को सुनाई और ठहाके लिये।

- हरमन चौहान, उदयपुर

सच के सिवा कुछ नहीं कहूंगा

शब्द रंजन मेरे हाथ में है। यह जब भी मेरे हाथ में आता है, मुझे लगता है मानो स्वयं भानावतजी ही मेरे सामने ठहाके लगा रहे हैं। यह उनकी आकांक्षाओं का ओरस पुत्र है। इसके शब्द-शब्द में वे बोलते-बतियाते नजर आते हैं। यह डॉ. भानावतजी की मुलाकातों का शब्ददूत है। राजनीति हो या साहित्य, संस्कृति हो या संकुलता ; शब्द रंजन सब पर अपनी सात्विक सटीक एवं सार्थक विवेचना से न तो कभी मुंह मोड़ता है और न ही मुकरता है। जो कुछ कहूंगा सच-सच कहूंगा, सच के सिवा कुछ नहीं कहूंगा जैसी निष्पक्षता का कबीर है शब्द रंजन। मैं शब्द रंजन की प्रतीक्षा उसी प्रकार करता हूं, जैसे कोई सद्गृहस्थ किसी सम्मानित पाहुने की या कोई मीत अपने प्रिय या प्रियतम की। विलम्ब होने पर मन में व्याकुलता होने लगता है। फोन की घंटी घनघनाता हूं। कुशलक्षेम पूछता हूं। भानावतजी ठहाका लगा कर आश्वस्त करते हैं- 'पोस्ट कर दिया है।' तसल्ली होती है। ऐसा है यह हठीला-रंगीला मेरा ढोला शब्द रंजन। मैं इसकी निरन्तरता और मुखरता के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करता हुआ स्वयं को उपकृत और अनुगृहीत मानता हूं।

- डॉ. पूरन सहगल, मनासा

जोगीफलां में नंदघर का उद्घाटन

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक द्वारा संचालित खुशी परियोजना के तहत् उदयपुर गिर्वा ब्लॉक के जोगीफलां आंगनवाड़ी केन्द्र पर नंदघर का उद्घाटन मुख्य अतिथि ब्रिटीश हाईकमीशन ऑफ इंडिया के रिटायर्ड डिप्लोमेट सर रिचर्ड स्टेग और बारापाल सरपंच श्रीमती गुलाब कटारा द्वारा किया गया।

सर रिचर्ड ने कहा कि नंदघर की योजना से छोटे बच्चे शालापूर्व शिक्षा से जुड़कर शिक्षा की मुख्यधारा में शामिल हो पाएंगे। यह योजना उनके लिए आधुनिक शिक्षा का केन्द्र साबित होगी। उन्होंने नंदघर पर लगे हुए उद्यान और वहां के प्राकृतिक सौन्दर्य की सराहना की। सरपंच कटारा ने वेदांता जिंक द्वारा संचालित इस योजना के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिन्दुस्तान जिंक के हेड कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि उदयपुर और राजसमंद जिलों में 200 नंदघरों का निर्माण किया जाएगा। वेदान्ता द्वारा केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय एवं राजस्थान सरकार के साथ मिलकर देशभर में 4000 आंगनवाड़ी केन्द्रों को नंदघर का रूप दिया जा रहा है। समारोह में जावर माइन्स के साइट प्रेसीडेन्ट राजेश कुण्डु, वेदांता की सीएसआर हेड नीलिमा खेतान ने सर रिचर्ड को नंदघर परियोजना के अन्तर्गत संचालित गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर सेवा मन्दिर से प्रियंका सिंह, लक्ष्मी ठाकुर, सुकेशी, आंगनवाड़ी सहायिका अर्चना देवी, जिंक सीएसआर टीम, आशा सहयोगिनी उपस्थित थी।

मंदिर से सटी झील

एक झील मंदिर से सटी हुई थी
दूसरी राजा की
नजर में चढ़ी हुई थी
परिणामस्वरूप
मंदिर के निर्देश
और राजाज्ञा की
दोनों के सम्मुख तख्ती लगी हुई थी-
मना है इसमें स्नान करना
शीतल करना अपना तन प्राण
हो जायेगी झील अपवित्र म्लान
सचमुच गहरा नीला पारदर्शी था
झील का पानी
अनछुएपन की पवित्रता से दीप्त
नहीं थी उसकी शानी
पर मैं जब रोज शाम को जाता था
उन झीलों के पास
तब देखता था
धुंधवाई हुई उनको बहुत उदास
जाड़े के शाम की बात
होती थी खास
तब शायद बहुत सालता था उन्हें
जीवन के निरर्थक
बीतते जाने का अहसास
यही तो था उन झीलों का जीवन
दिनभर पवित्रता के गुमान का हंसना
सांझ को निरर्थकता का सूनापन।

-नथमल केड़िया

बसंत

बसंत रो है आवणो
फूलां मांय है जांवणो
पीळो घूंघट करती
करती सिणगार धरती
भंवरा अर तितली अमृत पावै
सूरज री किरणां राज जमावै
धरा नुंवी बीनणी बणी है
पैरवा रा मोती-मणी है
बसंत रो है आवणो
फूलां मांय है जांवणो।।

- रेखा ढिल 'रक्षा'

नेह का प्रतिदान

दीपक!
तुम मिट्टी के ही थे ना!
स्नेह पूरित कर अपने हाथों से
मैंने प्राण फूंके थे तुममें,
आंधियां और बारिशों से
बचाने के लिए लगातार
छुपाती रही तुमको
लेकिन नेह का प्रतिदान ऐसा?
तुमने तो मेरा आंचल ही
जला दिया।

-ज्योत्स्ना इन्द्रेश

सम्बन्धों की पराकाष्ठा

डॉ. महेन्द्र भानावत के अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत के साथ मेरे कॉलेज जीवन में तथा कॉलेज के बाद भी बड़े घनिष्ट सम्बन्ध रहे। भाभीजी शान्ताजी के स्नेह के कारण जब भी जयपुर जाना होता था तब मैं पूरे परिवार से मिलने दयानन्द मार्ग वाले मकान पर अवश्य जाता था।

नरेन्द्र जैनधर्म के बहुत लोकप्रिय वक्ता थे। नरेन्द्र के भाषणों की अनेक कैसेट निकली हुई थी, जिनको पाने के लिये लोग तरसते थे। वे प्रवचन के लिये मुम्बई आते रहते थे। उनका प्रवचन प्राय: चर्चगेट के निकट इंडियन मर्चेन्ट चेम्बर के हॉल में हुआ करता था। उनसे मिलने के लिये लोग लम्बी कतार में इन्तजार करते रहते थे। मुम्बई आने पर वे मुझसे अवश्य मिलते थे। जब नरेन्द्र प्रवचन के बीच मुझसे मिलने हॉल के बाहर आते थे तो उनके अनुयायियों को आश्चर्य होता कि यह कौन व्यक्ति है जिसके लिये नरेन्द्र प्रवचन के बीच बाहर आ गया। तब हम लोग कॉलेज के दिनों की चर्चा करके आनन्दित होते थे। कॉलेज के दिनों के एक सहपाठी श्री लूणकरण बेगाणी से भी मिलना उनके एजेण्डा का एक भाग था।

नरेन्द्र को कैंसर ने ग्रसित किया। वे निदान के लिये मुम्बई आये हुए थे। भूलाभाई देसाई मार्ग पर एक गेस्ट हाऊस में रूके हुए थे। उनसे सम्बन्धित एक घटना का बखान करना चाहूंगा, जिसने मुझे झकझोर दिया। मुझे देखकर उनकी आंखों में आंसू छलक गये। तब शान्ताजी ने कहा –'आपकी आंखों में आंसू कैसे! इतने लोग आये परन्तु आपने सबको धैर्य बंधाया और जीवन का मर्म समझाया। आज बागड़ीजी से मिलने पर आंसू!' नरेन्द्र का जवाब था –'मुझे कैंसर रोग ने ग्रसित किया, इसकी पीड़ा या दुख नहीं है। मैं बागड़ीजी की आंखों में मेरे कारण जो दर्द देख रहा हूं उसे सहन नहीं कर पाया।' यह हमारे सम्बन्धों की पराकाष्ठा थी।

एक सन्त की तरह नरेन्द्र ने अंतिम दम तक अपनी पीड़ा को पछाड़ा और शान्ताजी भी संभवत: नरेन्द्र के दर्द को झेल नहीं पाई सो दोनों ही असमय-बेसमय स्मृतिशेष हो गये।

-मनमोहन बागड़ी

साहित्य मंडल का पाटोत्सव

साहित्य मंडल के प्रधानमंत्री श्याम देवपुरा ने खबर दी कि नाथद्वारा में 7-8 फरवरी को साहित्य मंडल तथा राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में संसार मार्ग के सम्पादक नथमल अरडावतिया, दौड़ता मनुष्य के रामनारायण जोशी, माइंड पूल न्यूज के मनोजकुमार व्यास, तरुण देश के दयाराम मेठानी तथा नव पल्लव की सुश्री अनुभूति गुप्ता को 'संपादक शिरोमणि' तथा मोहित गौड़ को 'पत्रकार प्रवर' की मानद उपाधि प्रदान की गई।

5100 रूपये की नकद राशि सहित पारसमल दुग्गड़, विज्ञानव्रत, देवकीनंदन कुम्हारिया, गोवर्धन को शॉल, सम्मानपत्र द्वारा अभिनंदित किया गया। डॉ. ओंकारनाथ द्विवेदी, डॉ. अमरसिंह सैनी, प्रकाशचन्द्र पाराशर, राधाकृष्ण सैनी, दुलीचंद लोधा, गिर्राजप्रसाद मधुर, दरियावसिंह राजपूत, कृष्णकुमार यादव, राजकुमार राज तथा शून्य आकांक्षी को ब्रजभाषा विभूषण का सम्बोधन प्रदान किया गया। दूसरे दिन के सत्रों में निबंध वाचन, समस्यापूर्ति के अलावा शिक्षण संस्थाओं के उच्च अंक प्राप्त छात्रों को 'विद्यार्थी रत्न' का सम्मान दिया गया। उपनिषद में शोधपत्रों का वाचन तथा बलवंतसिंह यादव को 'राष्ट्रसेवा रत्न', विवेकप्रकाश सक्सेना को 'संगीत रत्न' के अलावा बलवीरसिंह करुण को 11 हजार रू. का गणेश वल्लभ राठी सम्मान तथा 'साहित्य मार्तण्ड' की उपाधि प्रदान की गई। 'हिंदी साहित्य मनीषी' उपाधि से रामरतन प्रसाद सिंह रत्नाकर, डॉ. सुरेन्द्रप्रसाद गोस्वामी, दिनेशकुमार पांडेय, आचार्य नीरज शास्त्री, डॉ. अमिता दुबे, डॉ. विद्योतमा मिश्र, डॉ. शीताभ शर्मा, एवं डॉ. बीनारानी गुप्ता विभूषित हुए।

भूत-प्रेतों का गांव.....

(पृष्ठ एक का शेष)

यह संस्था भूत-प्रेतों व आत्माओं के अस्तित्व के संबंध में महत्वपूर्ण शोध करती है। इस टीम ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि कुलधरा में बहुत कुछ असामान्य है। टीम के एक सदस्य के कंधे पर किसी ने पीछे से हाथ रखा था, परन्तु जब उसने मुड़ कर देखा तो वहां कोई नहीं था। उनकी गाड़ियों के शीशों पर बच्चों के हाथों के निशान भी मिले थे। टीम के पास एक यंत्र 'घोस्ट बॉक्स' था जिसके द्वारा आत्माओं से बातचीत की जाती है। इस यंत्र में कुछ आत्माओं के नाम, अस्पष्ट आवाजें आदि रिकार्ड की गई थीं। संभवत: आत्माएं ऐसी भाषा में बोल रही हों जो टीम के समझ से परे हों। उल्लेखनीय है कि लोगों के भय को दूर करने के लिए 18 सदस्य रात्रि में गांव के भीतर सोये थे जहां उन्हें बुरा अनुभव तो नहीं हुआ परन्तु पूरा विश्वास हो गया था कि गांव में आत्माओं का दबदबा अवश्य है।

सैलानियों को भूतों-प्रेतों की खतरनाक हरकतों से बचाने की दृष्टि से प्रशासन ने गांव के प्रवेश मार्ग पर एक गेट बनवाया है जो रात्रि में बंद कर दिया जाता है। पास ही एक बोर्ड पर पर्यटकों के लिए चेतावनी अंकित है- शाम ढलते ही सभी लोग कुलधरा से बाहर आ जाएं।

अन्ततोगत्वा कानोड़ में तहसील

राजस्थान सरकार के वसुंधरा राजे बजट में अन्ततोगत्वा कानोड़ में तहसील कार्यालय खोलने की घोषणा से गांववासियों ने बड़े उल्लास और उत्साह से बांसों उछलता हर्ष जाहिर किया। कोर्ट चौराहे पर जमकर आतिशबाजी की। वहां की प्रसिद्ध मरकियां और लड्डू बांटे और सरकार तथा विधायक रणधीरसिंह भीण्डर की जय-जयकार की। लोकतंत्र की राजनीति में जनता प्रमुख होती हुई भी बिचारी हो जाती है और वोट की याचना करने वाला प्रतिनिधि अपने को सर्वेसर्वा समझता हुआ कुर्सी पर जाकर चिपक जाता है। जनता जब धार लेती है तो उसकी पिचक निकाल देती है अन्यथा तो वह शेर सी दहाड़ में ही फूला-फला रहता है। जनसेवा करने वालों को उनके बाद भी पीढ़ियां याद करती रहती हैं।

पिछले चालीस वर्षों से तहसील बनाने की मांग में किसी की व्यक्तिगत चालबाजी नहीं थी। समय-समय पर धरने दिये। प्रदर्शन किये। ज्ञापन दिये। उदयपुर-जयपुर तक की दौड़ाभागी की पर किसी के सिर की जूं तक नहीं रेंगी। आलम उल्टा यह बना कि सरकार ने धरणार्थियों पर मुकदमा दायर किया। लगातार सात वर्ष की जिद्दोजहद के बाद सरकार ने मुकदमा उठाया। जिस जनता ने सरकार को सिर पर बिठाया समय आने पर उसी ने उसे सरका भी दिया।

नगर विकास मंच के संरक्षक अनिल भानावत ने बताया कि गत अप्रेल में फिर आंदोलन के भाव तेज हुए। यह आंदोलन 28 दिन तक चला। यहां तक कि 125 कारों और 25 बसों में सवार जागरूक नर-नारियों ने उदयपुर आकर ज्ञापन दिया। सरकार हिली और कुछ गीली भी हुई। सूत्र पड़े कानों में कुलकुलाहट हुई। विधायक भीण्डर ने भी भड़भड़ाहट दी। सब जानते हैं, कानोड़ का पानी जब चढ़ जाता है तो अच्छों-अच्छों की उतार देता है। जो भी हुआ, परिणाम बेहतर होने पर फिजां बदल जाती है। भूल-चूक रफा-दफा। इस अभियान में सबका सम्मिलित सहयोग रहा। रेल के डिब्बों की तरह सब एकाकार बने फिर भी इंजन बने युवा साथियों में नगरपालिका चेयरमेन अनिल शर्मा, वाइस चेयरमेन दर्शन शर्मा, तुलसी अमृत के संचालक मनोज भानावत, पार्षद भवानीसिंह चौहान,

युवा जनता सेना के चेतनसिंह भाटी, अभय बाबेल, फिरोज भाटी, अभिषेक धींग, राजकुमार सहलोत आदि का उल्लेखनीय योग स्मरणीय रहेगा।

नगर विकास मंच के संरक्षक अनिल शर्मा ने बताया कि दो मांगें और हैं सरकार के पाले में। पहली अजमेर विद्युत निगम लि. का सहायक अभियन्ता कार्यालय हो और दूसरी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में 30 बेड की संख्या बढ़ाकर 100 कर दी जाय साथ ही 20 वर्ष पुरानी ढर्राई एक्सरे मशीन बदली जाय। सरकार के लम्बे हाथ हैं और हम सब रणधीरसिंहजी जैसे योद्धा के साथ हैं।

नारायण सेवा संस्थान के सामूहिक विवाह में 50 दिव्यांग बने हमसफर

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में दो दिवसीय 30वां दिव्यांग एवं निर्धन नि:शुल्क सामूहिक विवाह 4 फरवरी को दिल्ली के राजौरी गार्डन में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। पचास जोड़ों ने वैदिक मंत्रों के बीच फेरे लिए।

विवाह समारोह का शुभारंभ संस्थान संस्थापक कैलाश 'मानव', सह-संस्थापिका कमलादेवी अग्रवाल, वृंदावन के भागवत मर्मज्ञ डॉ. संजय कृष्ण जी सलिल, पं. संजीव कृष्ण ठाकुर, संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल व निदेशक वंदना अग्रवाल द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ।

विशिष्ट अतिथि कनाडा के कैलाश भटनागर, नई दिल्ली से कुसुम गुप्ता, उद्योगपति रमेश गोयल, आईएएस इरा सिंघल, श्रीमती चारूलता, उत्तरकाशी से पण्डित सुरेश शास्त्री, तंजानिया से भरत भाई परमार, अमित शाह के निजी सचिव राकेश मिश्रा, अ.भा वैश्य महासम्मेलन के महामंत्री सत्यभूषण जैन एवं लंदन से हंसमुख गोहिल थे।

इस अवसर पर कैलाश 'मानव' ने कहा कि संस्थान ने पिछले 29 विवाहों में 1301 दिव्यांग एवं निर्धन जोड़ों की गृहस्थी बसाने में पहल की। विवाह

समारोह में ऐसे जोड़ें भी एक-दूसरे के जीवन साथी बनें, जिनमें एक पांव से तो साथी हाथ से दिव्यांग था। किसी जोड़ें में एक दिव्यांग था तो दूसरा सकलांग। ऐसे भी जोड़े थे जो घुटनों के बल या घिसट कर चलते हैं, लेकिन अब ये सभी एक-दूसरे के पूरक बनकर खुशनुमा ज़िदंगी की इबारत लिखेंगे।

इन जोड़ों में से अधिकतर के संस्थान में ही पोलियो केरेक्शन के नि:शुल्क ऑपरेशन हुए और यहीं उन्होंने आत्म निर्भरता के लिए सिलाई, कम्प्यूटर, मोबाइल सुधार, मेहन्दी इत्यादि का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

समारोह में देश-विदेश से पधारे अतिथि कन्यादान के सहभागी बने। उन्होंने नवयुगलों को गृहस्थी का आवश्यक सामान थाली, कटोरी, गिलास, स्टील की कोठी, कुकर, क्रॉकरी, सिलाई मशीन, डीनर सेट, इस्त्री, गैस चूल्हा, बिस्तर, कंबल, बेडशीट्स, तकीया, घड़ी, साड़ियां, पेंट-शर्ट्स, सोने का मंगलसूत्र, कान के टॉप्स, चांदी की पायल, बिछीया, अंगूठी व सौंदर्य प्रसाधन का सामान प्रदान किया गया। चयनित दिव्यांगजन को सहायक उपकरण यथा-ट्राइसाईकिल, व्हीलचेयर, वॉकर, बैसाखी, ब्लाइंड स्टिक, श्रवण यंत्र आदि भी प्रदान किए

निवेशकों को सशक्तिकरण प्रदान करता है सेबी : पारीख

उदयपुर। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) और बीएसई निवेशक जागरूकता निधि की ओर से

निवेशक जागरूकता सेमीनार सोमवार को 'इन्वेस्टस एजुकेशन' होटल रेडीसन ग्रीन में आयोजित किया गया।

सेमीनार को संबोधित करते हुए सेबी के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर नागेन्द्र पारीख ने बताया कि निवेशक खुद जागरूक रहकर निवेश करें। सेबी वर्तमान निवेशकों को सशक्त करने, बचत से निवेश की ओर प्रेरित करने और भविष्य की जनसंख्या को निवेश बनाने के लिए कार्यरत है। इस दौरान पारीख ने अपील की कि महिलाएं वित्तीय आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ वित्तीय साक्षर भी बनें तो ज्यादा अच्छा होगा। लोग जालसाजी वाली योजनाओं से बचें। नकल के आधार या फिर सिर्फ अफवाहों के आधार पर निवेश नहीं करें। निवेश जुआ नहीं है। सेबी के गठन से लेकर अब तक की यात्रा पूरी तरह निवेशकों की सुरक्षा के लिए है।

सेमीनार में हैड बीएसई आईपीएफ सी.वासुदेवन ने स्टॉक एक्सचेंज द्वारा किये जा रहे प्रयासों के बारे में बताया कि शेयर मार्केट में निवेश पर ज्यादा फायदा है, फिर भी नये निवेशक म्यूचुअल फंड के जरिये दीर्घ अवधि के लिये निवेश करें। कमाई के पहले दिन से बचत कर उसे निवेश करें। सेमीनार में निवेशकों ने कई सवाल पर निवेश से संबंधित पहलुओं पर जानकारी हासिल की। इशु तायल बीएसई जयपुर ने सिक्योरिटीज मार्केट एवं म्यूच्यूअल फंड्स के बारे में विस्तार से बताया।

'मीट द लीजेंड' आयोजित

उदयपुर। एनआर ग्रुप की इकाई साइकिल प्योर अगरबत्तीज ने अपने खुदरा विक्रेताओं को मुंबई में आयोजित मेगा शो 'मीट द लीजेंड' में शामिल कर ब्रांड एम्बेसडर अमिताभ बच्चन से मुलाक़ात का अवसर प्रदान किया।

इस आयोजन के लिए योग्यता की प्रतियोगिता 1 अगस्त से 15 अक्टूबर 2017 तक आयोजित की गयी थी। इसमें लगभग 50,000 खुदरा विक्रेताओं ने इसमें भाग लिया और अंत में 500 विजेता चुने गए। यह पहला मौक़ा था जब इस ब्रांड ने अपने ब्रांड एम्बेसडर, अमिताभ बच्चन को खुदरा विक्रेताओं से बातचीत के लिए आमंत्रित किया।

साइकिल प्योर अगरबत्तीज के प्रबंध निदेशक अर्जुन रंगा ने बताया कि चाहे ग्राहक हों, कर्मचारी हों या खुदरा विक्रेता साइकिल प्योर हमेशा से अपने सहयोगियों को हर संभव तरीके से मदद करता रहा है। इस प्रतियोगिता के अंतर्गत हमने भाग्यशाली विजेताओं से मिलने के लिए अमिताभ बच्चन को आमंत्रित किया। मीट द लीजेंड प्रतियोगिता का आयोजन सम्पूर्ण भारत में सभी खुदरा विक्रेताओं के लिए था। राज्यावार प्रतियोगिता के बाद मध्य, पूर्व, उत्तर, पश्चिम और दक्षिण में क्षेत्रीय मुकाबला हुआ। जिसमें से मेगा इवेंट के लिए विजेताओं का चयन किया गया।

जिंक को गोल्ड अवार्ड

उदयपुर। दरीबा और देबारी में सोलर पॉपर प्रोजेक्ट्स के लिए आरई ऐसेट्स एक्सीलेंस अवार्ड समिट में यूटिलिटी स्केल परियोजना पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए हिन्दुस्तान जिंक को राइसिंग केटेगरी में गोल्ड अवार्ड से सम्मानित किया गया। नई दिल्ली में आयोजित समारोह में संयुक्त सचिव नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय जीके गुप्ता और संयुक्त सचिव विदेश मामले डॉ. केतन शुक्ला ने जिंक को यह पुरस्कार प्रदान किया।

भारतीय स्किल डेवलपमेंट यूनिवर्सिटी का स्टार्टअप 'अहो-थ्रीडी' के साथ करार

उदयपुर। भारत सरकार के स्किल डेवलपमेंट इशिएटिव को आगे बढ़ाने व युवाओं को डिग्री के साथ काम के हूनर के सपने को साकार करने के लिए थ्रीडी प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी आधारित जयपुर के एक स्टार्टअप 'अहा-थ्रीडी' इनोवेशन्स के साथ भारतीय स्किल डेवलपमेंट यूनिवर्सिटी (बीएसडीयू) ने सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए।

बीएसडीयू के ट्रस्टी अध्यक्ष जयंत जोशी ने बताया कि बीएसडीयू भारत के पहले थ्रीडी प्रिंटर डेवलपर और स्टार्टअप कंपनी अहा-थ्रीडी इनोवेशन्स प्राइवेट लिमिटेड थ्रीडी इनोवेशन्स, थ्री डी प्रिंटिंग लैब की स्थापना करेगा। पहले चरण में, बीएसडीयू के छात्रों को थ्रीडी प्रिंटर बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। दूसरे में भारतीय बाजार के लिए विभिन्न मॉडलों के थ्रीडी प्रिंटर के निर्माण की परिकल्पना को मूर्त रूप दिया जाएगा। तीसरे में बीएसडीयू कैम्पस में थ्रीडी प्रिंटिंग पर एक रिसर्च एडं डिवलपमेंट सेंटर स्थापित किया जाएगा। जोशी ने बताया कि बीएसडीयू ड्यूअल सिस्टम ऑफ स्किल्स एजुकेशन (स्विस ड्यूल सिस्टम) की वैश्विक अवधारणा पर कार्य कर रहा है जिसका मसद इंडस्ट्री विशेष के लिए सैद्धातिक ज्ञान के साथ-साथ प्रायोगिक ज्ञान को भी उन्नत करना है। शिक्षा में ड्यूल सिस्टम को लाने का मकसद पारम्परिक शिक्षा प्रणाली की बजाय छात्रों को जॉब के लिए तैयार' करना है।

अहा थ्रीडी इनोवेशन्स के संस्थापक आकाश ने बताया कि थ्रीडी प्रिंटिंग मार्केट में वैश्विक रूप से 12 खरब डॉलर के विनिर्माण क्षेत्र की पूर्ण क्षमता है। इंडस्ट्री इंटेलीजेंस के अनुसार थ्रीडी प्रिंटिंग और प्रोटोटाइप तकनीक हमारे उज्ज्वल भविष्य का चेहरा है। इससे पारम्परिक बाजार में भी बदलाव आएगा। बाजार आधारित इंटेलीजेंस समाधान फर्म 6 डब्ल्यू रिसर्च के अनुसार वर्ष 2022 तक भारतीय थ्रीडी प्रोटोटाइप व मैटेरियल मार्केट 62 मिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। इस समझौते के माध्यम से युवाओं को रोजागार के इस नए क्षेत्र में प्रशिक्षित कर उनके स्वर्णिम भविष्य की राह प्रशस्त की जा सकती है।

बीएसडीयू अध्यक्ष डॉ. एस. एस. पाब्ला ने कार्यक्रम में मौजूद युवाओं, उद्यामियों, अधिकारियों से कहा कि हम शीघ्र ही एक छात्र, एक मशीन की अवधारणा को साकार करने जा रहे हैं। औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुसार बैचलर ऑफ वोकेशनल प्रोग्राम के तहत छात्रों के प्रतिभा पूल बनाते हैं। इसके लिए सख्त पाठ्यक्रम को भी फ्लेक्सिबल रखते हैं। एक बार नामांकन होने के बाद प्रत्येक प्रशिक्षु को स्किल डेवलपमेंट के कार्यक्रम जारी रखने का मौका दिया जाता है। अभी थ्रीडी प्रिंटिंग की एप्लीकेशन की विनिर्माण, निर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षा, कला, मोटर वाहन, फैशन व उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे उद्योगों में भारी मांग है।

आईआईएम उदयपुर में जोश वार्ता का आयोजन

उदयपुर। जिन्दगी में सफलता पाने के लिए जोश, जज्ब और जुनून जरूरी है। उससे भी बढ़कर सबको साथ लेकर चलने की कला और जिन्दगी की मूलभूत जरूरतों से जूझ रहे लोगों के जीवन में खुशियां बिखरेन का संकल्प होना चाहिए।

परिस्थितियां चाहे जितनी विपरीत हो, हौसलों के पंख हमेशा कामयाबी की ओर ले जाते हैं। यह विचार आईआईएम उदयपुर में जोश टॉक्स की ओर से फेसबुक के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं ने व्यक्त किए।

उन्होंने अपने जीवन के उतार-चढ़ाव और उन सबके बीच सतत संघर्ष करते हुए सफलता प्राप्त करने तक की यात्रा को बहुत ही रोचक अंदाज में बयां किया। उद्यमियों की कहानियां इतनी प्रेरणास्पद थी कि हर प्रेरक विचार पर प्रतिभागियों ने जमकर तालियां बजा उत्साहवर्धन किया। राहुल दुबे 19 वर्ष थे जब उन्होंने दिल्ली छोड़ दिया और उदयपुर जिले के एक दूरदराज के आदिवासी गांव में मुफ्त में काम करने लगे।

आज वह इसी गांव में एक विद्यालय चला रहे है और युवाओं को अपनी शिक्षा पूरी करने, जल्दी शादी न करने और नौकरी ढूंढने की लिए प्रेरणा दे रहे हैं। उनकी उच्च उत्साही बात ने सबके दिलों में जगह बना ली। सात साल की उम्र में लब्धि सुराणा ने राजस्थान की सबसे छोटी स्केटिंग करने वाली और नेशनल चिल्ड्रन अवार्ड पाने वाली खिलाड़ी बन साबित कर दिया कि सफलता का कोई लेना-देना नहीं है। लब्धि ने कहा कि अपनी तैयारियों को हमेशा सच के खरे पैमाने पर परखते रहना चाहिए।

पेशे से एक चाय विक्रेता, पवन दास वैष्णव प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी से प्रेरित हैं, अपने लॉ कॉलेज में वे प्रेसिडेंट पद क लिए लड़े। डॉ प्रीती पंवार सोलंकी ने 2016 में एदिवा द्वारा श्रीमती इंडिया टैलेंटेड क्वीन सब्सटांस जीता। उसी वर्ष उन्हें श्रीमती यूनाइटेड नेशन में भाग लेने का मौका मिला।

सन 2009 में कपिल शर्मा ने उदयपुर में फाइव स्पलैश शुरू किया, जिसका उद्देश्य उद्योग में क्या आवश्यक है और उनके लिए क्या पेशकश की जा रही है, उसके बीच अंतर को कम करना है। बीपीओ सेवा प्रदाता ने 200 से ज्यादा लोगों को रोजगार दिया और जोधपुर और अजमेर तक भी विस्तार किया है। उनकी यात्रा में दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया। डॉ शिखा शर्मा आत्महत्या की रोकथाम के क्षेत्र में अपने काम के लिए एक अग्रणी परामर्श मनोवैज्ञानिक हैं।

उन्होंने सभी को मानसिक स्वास्थ्य सलाह दी। अपने बॉलीवुड गीतों के लिए जाने जाते है, प्रियांश पालीवाल ने संगीत के क्षेत्र में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नाम कमाया।

उनके दिलचस्प अनुभवों ने सभी को मंत्रमुग्ध किया। जे कुमार ने स्टॉल मालिक के रूप में में कॅरियर शुरू किया और लगभग 50 प्रकार के एग डिशेज का आविष्कार किया और उदयपुर के एग किंग का खिताब हासिल किया। सशक्त महिला सरपंच कविता जोशी ने देश में महिलाओं की बढ़ती शक्ति और आत्मनिर्भरता पर एक संदेश दिया।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वाषिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan,** UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

उदयपुर में उतरा 'म्यूजियम ऑफ द मून'

उदयपुर। भारत में अपनी 70वीं वर्षगांठ मना रहे ब्रिटिश काउन्सिल ने उदयपुर के सिटी पैलेस में देशी-विदेशी

सैलानियों और आमजन को दो दिन के लिए 'म्यूजियम ऑफ द मून' की सौगात दी। दुनियाभर में बहुचर्चित रही चंद्रमा की इस प्रतिकृति को देखने लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा।

महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, सिटी पैलेस उदयपुर के सहयोग से हुए इस आयोजन में इक्कीस मीटर चौड़ी चांद की प्रतिकृति जिसे नासा लूनर रिकॉन्श्यिस ऑरबिटर कैमरा से प्रतिकल्पित किया गया है और यूके स्पेस एजेंसी टूर्स इण्डिया ने सृजित किया है, का भव्य प्रदर्शन किया गया। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउन्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबन्धक ट्रस्टी अरविन्दसिंह मेवाड़ की मौजूदगी में इस प्रदर्शन का औपचारिक उद्घाटन हुआ।

इससे पूर्व इसे मुम्बई की हृदयस्थी गेटवे ऑफ इण्डिया में 3 व 4 फरवरी को प्रदर्शित किया गया था। ब्रिटिश काउन्सिल म्यूजियम ऑफ द मून को ब्रिटेन-भारत सांस्कृतिक वर्ष के अंतिम चरण तथा ब्रिटिश काउन्सिल के लांच के 70 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में यहां लाया है।

म्यूजियम ऑफ द मून इक्कीस मीटर चौड़ी चांद की एक प्रतिकृति है जिसे ब्रिटिश कलाकार ल्यूक जेरेम लैण्ड्स ने तैयार किया है। चंद्रमा के इस अनूठे संग्रहालय में अवॉर्ड विनिंग ब्रिटिश संगीतकार डेन जोन्स संगीत मय बनाया। उद्घाटन के अवसर पर इसका नजारा 150 वर्ष बाद हुए चंद्रग्रहण के अवसर पर सुपर ब्लड ब्लू मून जैसा रहा।

इस अवसर पर ब्रिटिश काउन्सिल, डायरेक्टर इण्डिया एलेन जेमिल ओबीई ने कहा कि ब्रिटिश कलाकार ल्यूक जेरम की टीम ने इस रेप्लिका को अथक प्रयासों के बाद तैयार किया है। विश्व की हर संस्कृति, धर्म और मान्यता में चंद्रमा का विशिष्ट स्थान है। इसे देवता के रूप में पूजा जाता है। समय का पालक, पथ प्रदर्शक, प्रकाश स्रोत, शीतलता का वाहक सहित कई उपमाओं से इसे अलंकृत किया गया है। विश्वभर के कलाकार, कवि, वैज्ञानिक लेखक और संगीतकारों ने इस पर शानदार रचनाएं की हैं। उनका मकसद ब्रिटेन और भारत के दोस्ताना रिश्तों को इस सजीव प्रतिकृति के माध्यम से और अधिक प्रगाढ़ बनाना है।

चन्द्रमा की प्रतिकृति के बारे में :

यह एक हॉट एयर बलून जैसा है जिसे विशेष प्रकार के फाइबर से बनाया गया है। कई चरणों के कठिन परीक्षण के बाद इस अद्भुत इंस्टोलेशन कृति का निर्माण हुआ। इसमें नासा की ओर उपलब्ध करवाए गए चित्रों के आधार पर हर इंच भाग तक विभिन्न पैमानों का प्रयोग किया गया है। चंद्रमा की रोशनी, उस पर दिखने वाली क्रेटर आदि को बहुत ही सुंदर तरीके से प्रिंट किया गया है। इसे और अधिक रीयल बनाने के लिए संगीतकार दान जोन्स की रची ध्वनि संरचना का भी प्रयोग किया गया है। सात मीटर व्यास का पैमाना व 120 डीपीआई चंद्रमा की सतह के विस्तृत नासा का के चित्रण में 1 : 500,000 के अनुमानित पैमाने पर, आंतरिक रूप से प्रकाशित गोलाकार प्रतिकृति के प्रत्येक सेंटीमीटर पर चंद्रमा की सतह को दर्शाया गया है। इस नायलोन, प्लास्टिक फेब्रिक व फाइबर प्रतिकृति का वजन

40 किलो है व हवा भरने के बाद यह 140 किलो वजनी हो जाता है। इसे प्लास्टिक के विशेष कंटेनर में ट्रांसपोर्ट किया जाता है। कलाकृति यूके स्पेस एजेंसी, ब्रिस्टल विश्वविद्यालय, ब्रिस्टल और साइंस एंड डिस्कवरी सेंटर के लिए सहयोग के साथ साझेदारी में बनाई गई है।

कैलाश 'मानव' नीति आयोग द्वारा सदस्य मनोनीत

उदयपुर। भारत सरकार के नीति आयोग के स्वयंसेवी कार्यक्रम प्रकोष्ठ की कार्यकारी समिति में नारायण सेवा संस्थान के फाउण्डर- चेयरमैन कैलाश 'मानव' को दो वर्ष की अवधि के लिए सदस्य मनोनीत किया गया है। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि देश के विभिन्न भागों से कार्यकारी समिति में समाजसेवा क्षेत्र के 28 चुनिंदा लोगों को शामिल किया गया हैं।

इस संगठन का कार्य स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता, बालश्रम, बंधुआ श्रमिक, महिला सशक्तिकरण एवं सुरक्षा, दिव्यांगों की चिकित्सा,शिक्षण-प्रशिक्षण व पुनर्वास वृद्धों की देखभाल कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण, पर्यावरण संरक्षण, महिला एवं बाल तस्करी की रोकथाम सहित नागरिकों के बेहतर जीवन और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए मूलभूत सुविधाएं एवं आधारभूत संरचना को लेकर आयोग को सलाह देना होगा। संगठन की बैठक हर तीसरे माह होगी।

यूसीसीआई का स्थापना दिवस समारोह

उदयपुर। उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री के स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि किर्लोस्कर ग्रुप के चेयरमेन विक्रम श्रीकान्त किर्लोस्कर ने कहा कि उत्तम क्वालिटी प्राप्त करने के लिये कार्मिकों को सम्मान देवें। किसी भी उद्योग की सफलता का सूत्र कर्मचारियों को अच्छा काम करने के लिये प्रेरित करने का प्रबंधन है।

इस वर्ष समारोह का मुख्य आकर्षण 'पारिवारिक व्यवसाय में संभावनाएं एवं चुनौतियां' विषय पर पेनल डिस्कशन रहा। अध्यक्षता सिक्योर मीटर के प्रबंध निदेशक संजय सिंघल ने की। डिस्कशन में वरिष्ठ पीढ़ी की ओर से राजस्थान सिन्टेक्स लि. के वी. के. लाड़िया, आनन्द कुमार एण्ड कम्पनी के अशोक कारवा, युवा पीढ़ी की ओर से अद्वैय सॉल्युशन के मनीष गोधा, आर्कगेट के कुणाल बागला तथा राजस्थान बेराईट्स के अभिषेक सिंघवी ने भाग लिया। अध्यक्ष हंसराज चौधरी ने अपने स्वागत उदबोधन में कहा कि नई सदी का नायक वही होगा जो स्वयं के साथ दूसरों को भी आगे बढ़ने में सहायता करेगा। विशिष्ट अतिथि सलिल सिंघल ने बिना सरकार की मदद के हम क्या कर सकते हैं इसकी योजना तैयार कर कार्य करने का आह्वान किया।

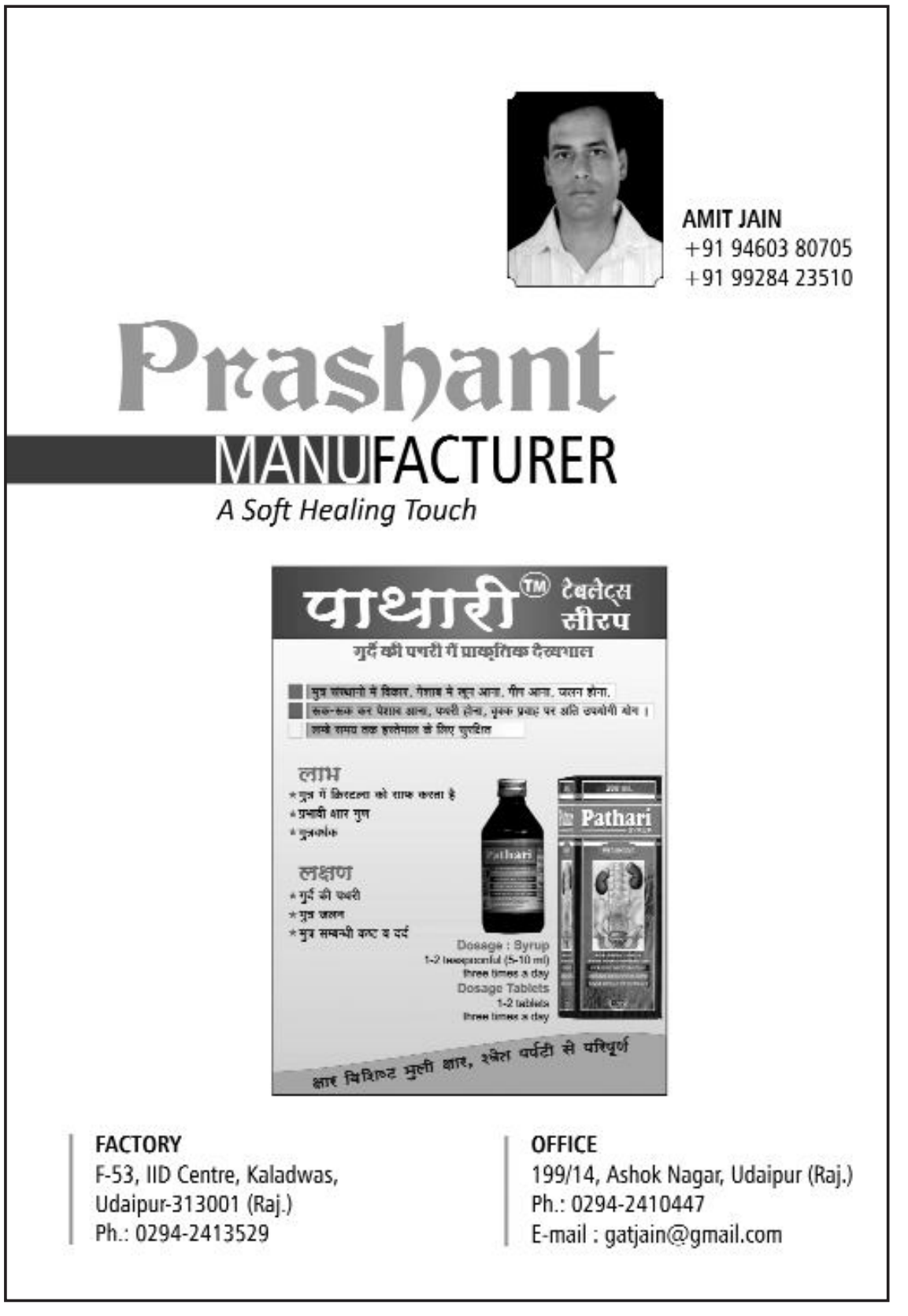

उदयपुराइट्स के सिर चढ़कर बोला भारतीय और विदेशी बैंड का जादू

चौथे संस्करण के वादे के साथ वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल का रंगारंग समापन

- शंकर, एहसान, लॉय की तिकड़ी छाई -

- डॉ. तुक्तक भानावत -

उदयपुर। उदयपुर में 9 से 11 फरवरी तक आयोजित हुए वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल में पहले दिन संगीत की दुनिया के चमकते सितारे शंकर-अहसान और लॉय के संगीत तिकड़ी ने चुन-चुन कर शानदार और यादगार पेशकश के सितारे जमीं पर उतारे। शंकर महादेवन ने गणेश वंदना से शुरूआत कर रॉकऑन से जब अपना सुर छेड़ा तो युवा दिल साथ में धड़कने और थिरकने को मजबूर हो गया। दर्शक दीर्घा से सुर में सुर मिलाते युवाओं का जोश देखते ही बन पड़ा।

इससे पूर्व इटली की जैज एंड प्रोग्रेसिव आर्किफॉक परफॉर्मर ओई डिप्नोई के ट्रायो ने पारम्परिक और नई संगीत धुनों का मिश्रण करते हुए द्वीप की संगीत संस्कृति को जीवंत कर दिया। साथी कलाकारों की नृत्य प्रस्तुतियों ने दर्शकों को ऐसा मुग्ध किया कि वे भाषायी दीवारों से परे मस्त मगन होकर नाचने लगे। बांसुरी, डफली, गीटार सहित कई ब्राजीलियाई वाद्य यंत्रों की जुगलबंदी दिलों पर छा गई। दूसरी

प्रस्तुति में फ्लाविया कोहेलो ने ब्राज़ील में लोगों के बहुत जल्दी जल्दी बोलने के अंदाज को गाने के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि उदयपुर आना सपने के सच होने जैसा है।

कार्यक्रम राजस्थान पर्यटन विभाग से मालविका सिंह, वेदांता हिन्दुस्तान जिंक से नीलिमा खेतान, वंडर सीमेंट से पी. पाटीदार उपस्थित थे। फेस्टिवल के निदेशक संजीव भार्गव ने फेस्टिवल को सफल बनाने के लिए सभी के सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया।

फेस्टिवल के दूसरे दिन फतहसागर के किनारे निराली कार्तिक ने कभी कबीर, तो कभी बुल्लेशाह, तो कभी ठेठ देसी धुनों पर 'अल्ला-ओम' सुनाया तो दर्शकों के दिलों के तार झंकृत हो उठे। संगीत के इस महाकुंभ में माटी बानी और शुभ सरन के बैंड ने संगीत रसिकों को नई-ताजी, ऊर्जावान लहरों से लबरेज कर दिया।

कार्तिक शाह और निराली कार्तिक ने अपने संगीत संग्रह हील द वर्ल्ड, बनजारा, रंग रंगैया, मितवा, बावरिया, बलमा, नैना बावरे, फंकी पावा, तोरे मतवारे नैना, ढाई आखर नाम, लेता जाइजो की चुनिंदा संगीत रचनाएं सुनाकर लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया।

न्यूयॉर्क के भारतीय गिटारवादक और संगीतकार शुभ सरन ने दो ड्रमर, दो सेक्सोफोन, दो कीबोर्ड व बेस गीटार पर विभिन्न धुनें बजाते हुए लोगों को थिरकने पर मजबूर कर दिया। शुभ सरन ने कहा कि कला सभी वर्गों के लिए समान है।

खास तौर पर भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत कला में किसी भी प्रकार के वाद-विवाद का कोई स्थान नहीं है। हम हमेशा कला के माध्यम से सोसायटी को रिप्रेजेंट करते हैं और इसी मकसद से मैं उदयपुर आया हूं। उनका संगीत जैज होने के बावजूद भारतीय क्लासिकल से प्रभावित है। यदि संगीत ईमानदारी और प्रामाणिकता से बजाया जाए तो दिल तक जरूर पहुंचता है।

शाम को गांधी ग्राउंड पर थाईलैड के मशहूर बैण्ड एशिया-7 के कलाकारों ने सेक्सोफोन, गिटार, की-बोर्ड, बास, ड्रम सेट, थाई डुंग और फिन वाद्ययंत्रों के फोक, फ्यूजन, जैज, ग्रुव का रंग जमा दिया। लीड सिंगर एमोर्नफेट ने थाई भाषा की बंदिशों को आवाज दी तो दर्शक ताल से ताल मिलाने लगे।

उसके बाद बिपुल छेत्री ने पहाड़ी संगीत, दार्जलिंग का फ्यूजन और नेपाली

भाषा के गीत सुनाए। सारंगी, तुंगना, ड्रम, की-बोर्ड, मेलोडी कॉर्ड जैसे वाद्य यंत्रों के साथ शानदार जुगलबंदी की तो दर्शक नाच उठे। इसके पश्चात अस्तित्व के सलमान खान और जमाल खान नियाज़ी की प्रख्यात जोड़ी ने पाश्चात्य और शास्त्रीय गानों के अल्फाजों में अच्छी हिंदी और उर्दू के मिश्रण ने कानों में मिसरी घोल दी। राजस्थानी मांड केसरिया बालम, अपने अंदाज में सुनाया तो अब तक दिल थामे बैठे रसिक भी थिरकने वालों में शामिल हो गए।

अंतिम दिन टीआरसी के नाम से मशहूर फिलिपिंस के इंडी लोक बैंड रैनसम कलेक्टिव जिसमें कीयन रैनसम ने वोकल और गिटार, जर्मेन चो पेक ने वोकल के साथ पर्कयूशन, लिली ने कीबोर्ड और म्यूरील गोंजालेस ने वायलिन, लीह हैलिली ने बास और रेडड क्लाउडियो ने ड्रम पर जब संगत की।

इसके बाद इजराइल के अंडरग्राउंड बीट पॉप जैज, फ्यूजन बैंड बटरिंग ट्रायो ने मन को सुकून और मीठा कर देने वाला संगीत सुनाया। आई जस्ट कीप, कम से विद मी, आई कॉल टू यू, क्लोज योर आई, यू शुड कॉल मी गीतों ने संगीत प्रेमियों को नई ऊर्जा से भर दिया।

तीसरी प्रस्तुति में आनंद भास्कर ने भारतीय शास्त्रीय और रॉक का संगम प्रस्तुत किया। उन्होंने गिटार पर चंदन रैना, बास पर नीलकांत पटेल, ड्रम पर शिशिर ठाकुर और वायलिन पर अजय जयंती के साथ 'कान्हा, राधे, तेरे बिना, फना, मेरा सफर, इंट्रो, फासले, एक्सक्यूज-मी, कलेक्वि सांग गाना जैसे एलबम गीत की प्रस्तुतियां दीं।

अंतिम प्रस्तुति में स्पेन के चेरेंगो बैंड में अलग्वेर मिकेल ने वोकल, मार्सेल लज़ारा, उर्फ टिटो ने वोकल व गिटार, सर्गी कार्बोनेल-हिपी ने की-बोर्ड, जोकोम नहर ने ड्रम, एलेक्स पुजोल ने बास व गिटार जैसे वाद्य यंत्र पॉ प्यूग पर्क्यूशन, इवान लोपेज ने सैक्सोफोन और जॉर्डी बर्नोला ने तुरही पर प्रस्तुतियां देकर शाम को यादगार बना दिया। डबस्टेप, लैटिन संगीत, पॉप, जमैकन संगीत, रॉक बीट्स से समां बांध दिया।

इससे पूर्व दोपहर को फतहसागर पाल पर अंकुर तिवारी ने साथी गिटारिस्ट भृगु की धुन पर 'तेरी आंखों का जादू पूरी दुनिया पर है, दुनिया की इस भीड़ में सबसे पीछे हम खड़े' और 'तुम बदल गए', 'तुझे जाने बिना जैसे गीत प्रस्तुत किए। अंकुर का डूब कर गाने का अंकुर का अंदाज सबको बहुत पसंद आया।

दो ट्यूनीशियाई संगीतकार भाइयों अमीन और हमजा ने अपने बैंड के साथ शास्त्रीय अरबी संगीत के दो प्रमुख वाद्य यंत्रों ऑउड और क्यूनन पर यादगार धुनें छेड़ीं। शास्त्रीय पश्चिमी संगीत, जाज, लैमेन्को, भारतीय, फारसी संगीत और कई अन्य विविध संगीत परंपराओं तक प्रस्तुतियों का विस्तार करते हुए अपनी सात चुनिंदा एलब्म्स के तराने पेश किए। संगीत प्रेमियों ने खड़े होकर जोरदार तालियों के साथ कलाकारों को दाद दी।

फेस्टिवल के निदेशक सहर संस्थान के संजीव भार्गव ने कहा कि उदयपुर की हवा में संगीत का ऐसा जादू है जो दुनिया में कहीं देखने को नहीं मिलता है। यहां के लोगों का प्यार, सम्मान और अपनेपन की भावना भी अनूठी है।

श्री भार्गव ने फेस्टिवल के आयोजन प्रमुख हिंदुस्तान जिंक, राजस्थान टूरिज़्म और वंडर सीमेंट सहित उदयपुर के संगीत प्रेमियों, देश-विदेश से आए कलाप्रेमियों व कलाकारों का धन्यवाद देते हुए चौथे संस्करण को भी फरवरी, 2019 में लाने का वादा किया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।